RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 39 अंक 32 हल्द्वानी सम्वत् 2080 सोमवार 15 जनवरी 2024 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

चुनाव का साल और उत्तरायणी

कार्यालय प्रतिनिधि

देश में इस बार लोकसभा चुनाव होंगे, इसके लिये 2024 आते ही राजनीतिक दलों के जाप के अलावा बड़े नेताओं का गणित शुरू हो चुका है। भाजपा पूरी तरह हिन्दू कार्ड पर आगे बढ़ते हुए 22 जनवरी को अयोध्या राम मन्दिर का उत्सव मनाने को तैयार है। इसके लिये पार्टी ने हर स्तर पर वह तैयारी कर रखी है जो उसे चुनाव में फायदा करवा दे। उत्तराखण्ड भी इस अभियान में अग्रणीय है। पार्टी की ओर से बूथ स्तर तक निगरानी रखी जा रही है और लगातार इस प्रकार के आयोजनों को बढ़ावा दिया जा रहा है, जिसका सीधा सा मतलब आगामी लोकसभा चुनाव पर जाकर ठहरता हो। चुनाव तक कैसा माहौल होगा यह समय बताएगा लेकिन इस समय तक तो सत्ता और संगठन हाबी है।

22 जनवरी को अयोध्या में राम मन्दिर प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम को लेकर उत्तराखण्ड में तैयारियां पूरी हो चुकी हैं। इस बार उत्तरायणी पर हो रहे कार्यक्रमों की थीम 'अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा' ही है। इसके लिये मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने पहले ही निर्देश दे दिए थे कि उत्तरायणी पर होने वाले कार्यक्रमों को अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम की थीम पर आयोजित किए जाएं। साथ ही लोगों से अपील की है कि वे दीपोत्सव के साथ ही विभिन्न आयोजन इस अवसर अवधि में करें।

राम मन्दिर प्राण प्रतिष्ठा को लेकर प्रदेश में भी तरह-तरह के आयोजनों में प्रभातफेरी, शोभा यात्रा, सुन्दरकाण्ड, दीपोत्सव, मंचीय प्रस्तुतियां, चित्रकला, सजावट की तैयारी हो चुकी है और कई जगह आयोजन होते दिखाई दे रहे हैं। साथ ही प्रमुख नदियों के घाटों की साफ-सफाई का अभियान भी जारी है।

2024 में सबसे पहले मकर संक्रान्ति का बड़ा उत्सव है तो इसमें परम्परागत जो होता है वह सब हो रहा है परन्तु लोकसभा चुनाव को लेकर इसे पूरी तरह रंग दिया गया है। प्रदेश के सबसे प्रमुख बागेश्वर उत्तरायणी में हमेशा से राजनीतिक मंच सजते रहे हैं और सरयू-गोमती के तट पर नेताओं को सुनने कार्यकर्ता व आम जन जुटते हैं। आजादी के आन्दोलन के समय अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ बड़ा आन्दोलन यहीं शुरू हुआ था। इस बार भी राजनीतिक पार्टियों के मंच सजे हैं जिसमें भाजपा अपने पिछले सभी आयोजनों का रिकार्ड तोड़ चुकी है क्योंकि राम मन्दिर में प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम सहित लोकसभा चुनाव इसका लक्ष्य है।

कांग्रेस सहित विपक्ष की ओर से आवाज उठ रही है कि भगवान राम सिर्फ भाजपा के नहीं हैं, इसलिये इस प्रकार की बातें समाज में न बोई जाएं जिससे विद्वेष फैले। 26 जनवरी/गणतंत्र दिवस के आयोजन को लेकर भी खुसर फुसर हो रही है और कहा जा रहा है कि देश के गणतंत्र दिवस से अधिक जोर मन्दिर में प्राण प्रतिष्ठा आयोजन को लेकर है।

उत्तरायणी तो राम मन्दिर प्राण प्रतिष्ठा आयोजन को लेकर रंगी और रमी है। जब सबकुछ तय है तो प्राण प्रतिष्ठा आयोजन भव्य होना ही है। गणतंत्र दिवस का सरकारी आयोजन हमेशा से तय है। ऐसे में लोकसभा चुनाव का आयोजन ही बचता है जिस पर अन्तिम मोहर जनता को लगानी है।

जोहार घाटी के बृजवाल कौम का वास्तविक इतिहास

जगदीश सिंह बृजवाल

ब्रिटिश शासन काल उन्नीसवीं शताब्दी में विलयम ट्रेल के शासन काल में जोहार के शौकाओं को सर्वप्रथम भोटिया शब्द का प्रयोग किया गया था। जबकि इसके विषय में चंद शासन व गोरखाशासन काल में कोई जिक्र न था। कुमाऊँ के खस जाती के लोग शौका शब्द से ही सम्बोधित करते थे। उन्नसवीं सदी से पूर्व के इतिहास का लेखा-जोखा न होने के कारण जोहार के इतिहास के विषय में ठीक-ठीक निश्चित रूप से कहना कठिन है। उन्नीसवीं सदी के अंग्रेज लेखक- ट्रेल, एटकिंसन, शेरिंग ने जो उलेख किया श्रेय जाता है तभी से अन्य इतिहाकार, लेखकों का ध्यान बीसवीं शताब्दी में जोहार की ओर भी गया था एटकिंसन द्वारा 'भोटीया मौहाल' का भी उल्लेख हुआ है। अनेक लेखकों ने किसी न किसी सन्दर्भित स्रोतों से इतिहास लिखना भी प्रारम्भ किया जिसमें किवर्दति, जनश्रुति, पौराणिक अनुश्रुतियों को भी आधार बनाया है।

जोहार घाटी के लेखकों द्वारा शौकाओं के इतिहास, बंशावली आदि विषयों पर लेखन कर लिपिबद्ध कर लिया गया जिससे सभी स्थितियों की जानकारियां मिलने लगी। जोहारी शौकाओं कौम में कई उपजातियों के इतिहास का उल्लेख भी किया गया है जिनके अध्ययन विश्लेषण से बृजवाल कौम के विषय में कुछ लेख लिखने की जिज्ञासा हुई। जिसमें बृजवाल उपजाति (बिलज्वाल) का इतिहास पर कुछ तथ्य परक उल्लेख करते हैं जो 1970- 80 दशक के बुजुर्गों द्वारा अपनी मुँहवाणी से पूर्वजों की कहीं बातें लोगों तक पहुचायी जाती थी। जो जनश्रुति भी इतिहास का आधार रखता है। कुछ चंदशासन का इतिहास भी लिखने के लिए जानकारी देती हैं।

बिलज्वाल जिनका मूल निवास बिल्जू जोहार हैं वर्तमान में उपजाति बृजवाल लिखते हैं जिनका मूल पुरुष सकराम कार्की था। आधुनिक जोहारी तथा मिरम्वालों के सहयोगी बनकर गढ़वाल से जोहार घाटी किया था। सकराम अपने दो बिरादरी के साथ बिल्जू आया तथा वहाँ से एक बिरादर मापा वह दूसरा रिलकोट में जाकर रहने लगे थे बिल्लू के सकराम के वंशज बृजवाल कहलाने लगे।

सकराम राणा डोटी आछाम, कुंकुंन क्षेत्र का रहने वाला था। वह अपने दो विरादरों के साथ जब काली नदी के किनारे मनकोट में आ कर रहने लगे तभी से कार्की कहलाए। कुछ समय यहाँ रहकर यह तीनों लोग चमोली गढ़वाल परसारी, पट्टी पेनखंड़ा चले गए। वहीं निवास करने लगे। वहाँ से आधुनिक जोहारियों के सहयोगी बनकर जाहार घाटी बिल्जू पहुँच गए, 15 वीं शताब्दी के उत्तार्ध में यहाँ अपना निवास बनाने की सम्भावना है। बिल्लू में सकराम कार्की के बंशज तीन राठो में विभक्त हो गए- सयाना राठ, धुरा राठ, भदुवा राठ। इनके अग्रज- शानिया, चुखिया, लोरू कहलाये। जहाँ से जोहार की बंशावली में उल्लेखित नाम दर्ज किया गया है।

यद्यपि इतिहासकारों द्वारा सकराम कार्की से सम्बन्धित किसी विषय का उल्लेख वर्णित नहीं किया गया है किन्तु सकराम कार्की का इन तीनों राठों के अग्रजो से रक्त सम्बन्ध अवश्य रहा है। पिता या पौत्र का क्या सम्बन्ध रहा है जिसके विषय में कुछ कहा नहीं जा सकता? सकराम कार्की आधुनिक जोहारी काल का बृजवाल जाति का मूल पुरूष रहा है..जहाँ से इतिहास लिपिबद्ध किया जाने लगा था। इतिहासकारों की अनभिज्ञता एक रहस्य है।

चंद शासन काल में एक ओहदा पद प्राप्त सुखराम कार्की (सुकराम कार्की) का उल्लेख किया गया है जिसने त्रिमल चंद के साथ षड्यंत्रकारी बनकर चंद शासक विजयचंद की हत्या कर दी। सकराम कार्की (सुखराम कार्की) समझ गया कि दो प्रतिद्वन्दियों के बीच फंसना कितना खतरनाक हो सकता है। विजयचंद के गद्दी पर बैठते ही सुखराम को मरवा दिया गया था।

सुकराम (सुखराम) इस विषय को इंगित करता है कि सकराम नाम शब्द बलिष्ठ व्यक्ति का होता था। सकराम कार्की जैसे नाम कई जगह उल्लेख किया गया है जोहार आने वाला सकराम कार्की ने भी जोहार में आकर मिरम्वाल वह बरफालों की प्रतिद्वंद्वीता में मध्यस्थता का कार्य अवश्य किया है जो मिलम व बुर्फू के बीच अवस्थित रहे थे। लगभग

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

शहर की सभ्यता

दुनियाभर में सभ्यताओं की खोज करते कई खूबसूरत शहरों के दफन होने का पता चलता है। उन शहरों में किस प्रकार की सुविधा और सहूलियत थी, इसका अनुमान उस दौर के निर्माण और उनकी बनावट को देख लगाया जाता है। गाँव से शहर बनने की इस सभ्यता का क्रम अभी तक जारी है। कुछ समय पहले तक मान लिया जाता था कि सामान्य सुविधाओं से युक्त एक ऐसी जगह 'शहर' है जिसमें पोस्टआफिस, स्कूल, अस्पताल, कार्यालय, बस सेवा इत्यादि आसान हो और ज्यादातर नौकरीपेशा लोग इसे पसन्द करते थे। इसके बाद व्यापारी वर्ग भी शहर से जुड़ा और अपनी दुकान-गोदाम के साथ शहर को भरपूर कर दिया। धीरे-धीरे शहरों का यह प्रचलन इतना बढ़ा की हर कोई शहर का होना या अपने इलाके को शहर बनाना चाहता है।

एक सुन्दर शहर की कल्पना करना अच्छा ही है लेकिन वर्तमान के सुन्दर शहर किसे कहें? सुविधा होने के साथ ही जनसंख्या का बेहिसाब दबाव ऐसे सुविधायुक्त स्थानों पर होने लगा है। ऐसे में इन शहरों को नए सिरे से विकसित किया जाने लगा है। यहाँ तक कि नए शहर बसाने के लिये पूरी तैयारी होने लगी है लेकिन उन शहरों में दिक्कत होने लगी है जो छोटे से बड़े शहर बन गये और अब सुविधाओं के लिये इनमें मारामारी होने लगी है। ऐसा ही ताजा उदाहरण उत्तराखण्ड का महानगर हल्द्वानी है।

हल्द्वानी को शहर बनते समय लोग बसना भी नहीं चाहते थे। मलेरिया और मच्छरों की भरमार के कारण भाबर में आने से लोग बचते थे लेकिन जब आवत शुरु हुई तो पहाड़ से लेकर मैदान तक चारों ओर से कुछ परिवार आ गये और खेतीबाड़ी के साथ यह भाबर शहर आरामदायक होने लगा। परिवारों के बढ़ते ही बाजार बनने लगे और सुगमता के कारण जंगल कटकर कालोनियां बनने लगीं। एक छोटा शहर फैलता चला गया लेकिन इसकी आड़ में सामाजिकता से जुड़े लोगों की उपेक्षा और अराजकों का भार बढ़ने लगा है। यही कारण है मुख्य शहर नाली-नाले तक घिर चुके हैं, इन्हें हटाने के लिये शासन-प्रशासन का दम निकल जाता है। चूंकि अब बात सर से ऊपर हो चुकी है इसलिये शहर में हथौड़ा चलना तय है। यही कारण है इन दिनों अतिक्रमण हटाने की सूचना भर से मुख्य शहर कांपने लगता है। शहर बनने या बसाने की सभ्यता को शासन-प्रशासन पर ही नहीं छोड़ा जा सकता है। इसके लिये सभी को सद्प्रयास में भागीदार होना पड़ेगा।

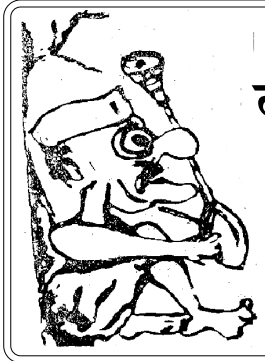

फसक

दाज्यू, हौंसला बना रहे तो फैंसला टिकने वाला ठैरे

चुनाव से पहले लुक्का-छिप्पी होती रहती है बल

दाज्यू, 22 तारीख को लेकर गुमान दा और भिक्कू बेचैन हैं। कह रहे थे- 'बस सबकुछ हो जाएगा। रामलला बैठने वाले हैं, देश बदल रहा है।' दाज्यू, हमें कुछ समझ नहीं आ रहा है कि अभी क्या होने वाला है। इतना भर जानते हैं कि हौंसला बना रहे तो फैंसला टिकने वाला ठैरा। अब देखो, मोदी ज्यू के पास क्या है? हौंसला ही तो है जिसने पूरा विपक्ष लपेट कर रख दिया। चुनाव से पहले लुक्का-छिप्पी होती रहती है बल। इस महीने से यह भी शुरु हो चुकी।

सरकार का पोर्टल तैयार हो चुका है चुनाव से से पहले सीएए के नियम लागू हो जाएंगे बल। गृह मंत्री अमित शाह पहले से कह रहे है। नागरिकता संशोधन अधिसूचित कर दिया जायेगा। अपने सीएम धामी ज्यू ने भी कहा है- 'भूमाफिया पर लगाम लगाने के लिये सख्ती की है।' कपकोट में रैली निकालकर पार्टी वाले बहुत खुश हैं।

दाज्यू, सबकी अपनी-अपनी खुशी हुई। नैनीताल पॉलिटेक्निक कालेज में जन्मदिन मनाते समय छात्रा के चेहरे में केक लगाने को लेकर दो छात्र गुटों में फोड़ाफोड़ हो गई। इसमें तीन छात्रों के सिर फूटे बल। खुशियों का कोई ठिकाना नहीं होता। कब किस पर बरस जाए और कब किसका फोड़ान.....। ट्रान्सपोर्टरों का हौंसला ही तो था कि सरकार ने कानून बनाकर उसे लागू नहीं किया। 'हिट एण्ड रन' को लेकर चालकों ने हाथ खड़े कर दिये थे और पेट्रोल पम्पों पर तेल समाप्त की सूचना लग गई थी। भाजपा के पुरोला विधायक दुर्गेश्वर लाल ने वनमंत्री सुबोध उनियाल का आदेश फाड़कर गुस्सा दिखाया। दाज्यू, हम पहले ही कह चुके हैं सबकी अपनी खुशियां और अपने गम ठैरे। विधायक-मंत्री सत्ता और एक ही पार्टी के हुए मामला तो निपटना ही था। बात हौंसले की है.....

सितारगंज के सिडकुल से सहायक लेखाकार द्वारा 9 हजार रुपये रिश्वत लेने का बहुत हल्ला मचा। दाज्यू, हौंसले की बात है कौन क्या कर रहा है। डकार मारने वाले कितना ले चुके क्या पता? लेखाकार.....भद पिटा गया। इसी प्रकार विजिलेंस ने काशीपुर से एक जेई को मनरेगा कार्यों के एवज में दस हजार की रिश्वत लेते पकड़ लिया। कौन कब फिसल जाएगा क्या पता। दाज्यू, ये तो छुटपुट ठैरे। तनख्वाह के अलावा टीए-डीए, पैनल में घुमाई, निरीक्षण, अन्य अण्ड-फण्ड कितना ही पचा लेने वाले हुए फुर्तीले.....। सटर-पटर अलग से.....। पाप धोने के लिये हनुमान चालिसा का पाठ कर लिया या 'ऊं जय जगदीश हरे' आरती। भगवान जाने इस कलजुग का अन्त कैसा होने वाला है।

दाज्यू, हमें तो रामदेव लगे हौंसले वाले आदमी। अनुलोम-विलोम करते हुए उन्होंने फैक्ट्री खड़ी कर दी। पूरा देश बाबा जी का च्यवनप्रास, साबुन, शहद, आटा, मसाले का स्वाद ले चुका है। रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने बाबा जी की उपस्थिति में पतंजलि गुरुकुलम एवं आचार्यकुलम का भूमि पूजन कर शिलान्यास किया। दाज्यू, हौंसला बना रहे बस। -तुम्हारा भुली झकरुवा

बेरीनाग निवासी सुधांशु पन्त राजस्थान के मुख्य सचिव बनने से उत्तराखण्ड हुआ गौरवान्वित

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

उत्तराखण्ड के होनहार वाशिंदे लगभग सभी क्षेत्रों में अपनी काबिलियत का परचम लहरा रहे हैं। आए दिन हम आपको समूचे प्रदेश को गौरवान्वित करने वाले राज्य के इन होनहार वाशिंदों से रूबरू कराते रहते हैं। इसी कड़ी में आज समूचे प्रदेश को गौरवान्वित होने का सुनहरा अवसर मूल रूप से रहने वाले सुधांशु पन्त ने प्रदान किया है, जिन्हें राजस्थान के मुख्य सचिव की जिम्मेदारी सौंपी गई है। खितोली, बेरीनाग निवासी बिजली विभाग के मुख्य अभियन्ता रहे जे.सी. पन्त व गृहिणी वीणा पन्त के बेटे सुधांशु पन्त 1991 बैच के आइएएस अफसर हैं। 12वीं तक की शिक्षा नैनीताल के सेंट जोजफ कालेज करने के बाद आइआइटी खड़कपुर से इंजीनियरिंग की। वह 2006 से 2012 तक राजस्थान के जैसेलमेर, झुंझुनू व जयपुर में डीएम, कमिश्नर रह चुके हैं। जयपुर के विकास में पन्त ने अभूतपूर्व योगदान दिया है, जिसे मिसाल माना जाता है। उनकी बहन संगीता जोशी नैनीताल में रहती हैं, उनके पिता जी विभाग में चीफ इंजीनियर रह चुके हैं।

सुधांशु का नैनीताल के मल्लीताल पोस्ट आफिस के पास गुडलक हाउस में आवास भी है। वरिष्ठ आईएएस अधिकारी सुधांशु पंत राजस्थान कैडर के 1991 बेच के आईएएस अधिकारी हैं।

राजस्थान कैडर मिलने के बाद उन्होंने प्रदेश में लम्बे समय तक काम किया है। 1993 में जयपुर एसडीएम के पद पर काम की शुरुआत की थी। इसके बाद पंत जैसलमेर, झुंझुनूं, भीलवाड़ा और जयपुर में कलेक्टर रहे। इसके अलावा जेडीए के कमिश्नर, कृषि विभाग के कमिश्नर और वन पर्यावरण विभाग में प्रिंसिपल सचिव भी रह चुके हैं। यही नहीं उन्होंने राजस्थान के प्रदूषण कन्ट्रोल बोर्ड के अध्यक्ष के तौर पर भी काम किया है। जयपुर शहर के विकास में सुधांशु का बड़ा योगदान माना जाता है। भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रलय में सचिव के पद पर काम कर रहे सुधांशु पन्त को वित्त के क्षेत्र में राजस्थान सरकार के द्वारा कई अवार्ड मिल चुके हैं। पंत को राजस्थान सरकार से साल 2000, 2001, 2002, 2003, 2004 में अवार्ड मिल चुका है। राजस्थान के कृषि विभाग के कमिश्नर रहे सुधांशु स्वास्थ्य विभाग दिल्ली में संयुक्त सचिव रहे चुके हैं। 2023 में केन्द्रीय स्वास्थ्य सचिव सुधांशु पन्त अपने तीन दिवसीय उत्तराखण्ड दौरे पर रहे थे, इन तीन दिनों में स्वास्थ्य सचिव ने कुमाऊँ मण्डल की विभिन्न चिकित्सा इकाईयों का निरीक्षण कर सम्बन्धित अधिकारियों को जरूरी दिशा निर्देश दिए। इसके साथ ही उन्होंने अल्मोड़ा, हरिद्वार, पिथौरागढ़, उधमसिंहगनर मेडिकल कालेज के निर्माणकार्यों को यथाशीघ्र पूरा करने के निर्देश दिए।

केन्द्रीय स्वास्थ्य सचिव ने टीवी सेंनिटोरियम भवाली को उच्च स्तरीय टीवी एंव चेस्ट संस्थान के रूप में विकसित करने के निर्देश भी अधिकारियों को दिए। इसके साथ ही नैनीताल के गेठिया सेंनिटोरियम को मेंटल हैल्थ इंस्टीट्यूशन के रूप में विकसित करने के लिए कार्य योजना बनाने की बात कही। श्री पन्त ने कहा उत्तराखण्ड के स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करने हेतु भारत सरकार पूरा सहयोग देगी। उत्तराखण्ड के रहने वाले सुधांशु बहुत ही सकारात्मक विचारधारा के और हमेशा सुधारात्मक कार्य करने में अग्रणी रहे हैं। उनके ब्यूरोक्रेसी में भी बहुत अच्छे सम्बन्ध रहे हैं। वह नई दिल्ली में लम्बे समय प्रतिनियुक्ति पर रहे। अब राजस्थान के मुख्य सचिव बने हैं तो भजनलाल सरकार में भी उनकी भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होगी। उन्हें मुख्य सचिव बनने पर बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं।

घटगाड़ नाले को देख बहाने बनाना छोड़ ठोस कार्य किया जाए

मुनस्यारी। घटगाड़ नाले को देख किसी भी प्रकार का बहाना बनाना छोड़ ठोस कार्य को अंजाम दिया जाए। आरोप लगाया जा रहा है कि यहाँ ठेकेदार की लापरवाही तथा मिलीभगत होने से इस नाले में आपदा के समय ही पुलिया का निर्माण कार्य किया जाता है और पुलिया एक महिने में ही आपदा का भेंट चढ़ जाती है। यह खेल बार-बार दोहराने से बेहतर है इसके लिये ठोस कार्य हों। इसी नाले में सेला गाँव की एक बेटी की रा.बा. इन्टर कालेज नमजला से घर आते बहकर उसकी मृत्यु हो गयी थी उसके बाद भी आज तक इस नाला मे पुलिया का निर्माण कार्य शुरू नहीं किया गया है। अधिकारियों को बार-बार कहने पर भी इस नाला का कोई सुध नहीं ला जा रही है। समाजसेवी मोहन सिंह दोसाद ने जिलाधिकारी से निवेदन है कि इस नाले को देखते हुए तुरन्त एक जाँच टीम गठित कर पुलिया का निर्माण कार्य शुरू किया जाए।

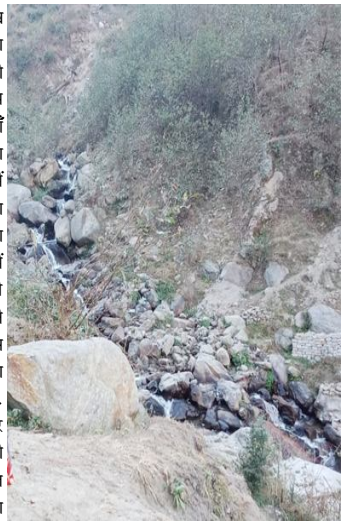

इस बारे में मल्ला जोहार विकास समिति के अध्यक्ष श्रीराम सिंह धर्मशक्तू का कहना है कि सीमान्त क्षेत्र इस प्रकार देखने वाला कोई नहीं है जिसमें सरकारी धन का दुरुपयोग होता है और इसका खामियाजा जनता को भुगतना पड़ता है। उन्होंने डीएम पिथौरागढ़ के कार्यों की सराहना करते हुए इस मामले में जांच के साथ ही पुलिया निर्माण की मांग की है ताकि किसी प्रकार की अनियमिताएं न होने पाए और जनता को परेशानी से बचाया जा सके।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

उम्मीद

२०२४ अपने समक्ष चुनौतियों का समाधान निकालने में फिर सफल होगा भारत

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

आज आवश्यकता है भारत खोजो यात्रा की। उस भारत को जहाँ हमारी ज्ञान-परम्परा है नए वर्ष 2024 में अनेक सम्भावनाएं हैं तो तमाम चुनौतियां भी। इसी साल के इसी महीने श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर का सैंकड़ों वर्ष पुराना स्वप्न साकार हो रहा है। सम्प्रति सभी मार्ग अयोध्या की ओर मुड़ गए है। इसी उमंग में 2024 की सम्भावनाओं और चुनौतियों पर विचार-विमर्श स्वाभाविक हैं। बीते साल की तमाम उपलब्धियां हैं।

विश्व में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ी है। भारत ने जी-20 का नेतृत्व किया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में जी-20 का एजेंडा भी जारी हुआ। रूस-यूक्रेन और इजरायल- हमास युद्ध में भारतीय नीति की प्रशंसा हुई है। इसी वर्ष भारत के मन और प्रज्ञा अन्तरिक्ष की सतह तक पहुँच गए। चन्द्रयान की सफलता अन्तरराष्ट्रीय चर्चा का विषय रही है। भारत आत्मनिर्भर हो गया है। राष्ट्र का आत्मविश्वास बढ़ा है। इतिहास के विरूपण का विषय पूरे वर्ष चर्चा में रहा है। इतिहास लेखन का पक्षपात स्पष्ट हो गया है। इस विषय पर राष्ट्रीय विमर्श 2024 में निर्णायक मोड़ ले सकता है। श्रीराम और श्रीकृष्ण को काव्यकल्पना बताने वाले कथित लिबरल सेक्युलर इतिहासकार लज्जित हैं। भारत के प्राचीन निवासी मूल अभिजन आर्य हैं। इन्हें विदेशी हमलावर बताया जा रहा है। 2024 में इस झूठ के पर्दाफाश के आसार हैं। नई शिक्षा नीति में प्राचीन ज्ञान परम्परा को विशेष महत्व मिला है। 2023 में भारत को नया एवं भव्य संसद भवन प्राप्त हुआ है। यह उमंग का विषय है, लेकिन संसदीय कार्यवाही में गतिरोध राष्ट्रीय चिन्ता और चुनौती के विषय हैं। संसदीय बहसों में कटुता बढ़ी है। राजनीतिक विमर्श में अभद्र शब्द प्रयोग बढ़ा है। संसदीय संस्थाओं में हुल्लड़ एवं असंसदीय भाषा चुनौती बनकर उभरी है। उम्मीद है कि 2024 में विधायी सदनों की भाषा प्रेमपूर्ण होगी। बहस की गुणवत्ता भी बढ़ेगी। भारत विश्व का प्राचीनतम जनतंत्र है। यहाँ वैदिक काल में भी सभा और समिति जैसी संस्थाएं रही हैं। उनकी कार्यवाही शालीन होती थी । भारतीय संसद में 1980- 85 तक ऐसी अराजक स्थिति नहीं थी। संसदीय जनतंत्र संवैधानिक संस्थाओं से चलता है। संवैधानिक संस्थाओं का आदर प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है, लेकिन संसद और चुनाव आयोग से तमाम संवैधानिक संस्थाओं का सम्मान घट रहा है। विश्वास है कि 2024 में इस चुनौती पर सकारात्मक विचार होगा। 2023 में उत्तर-दक्षिण की विभाजक चर्चा भी हुई। उत्तर, दक्षिण, पूरब और पश्चिम भारत के ही अविभाज्य अंग हैं। राजनीतिक कारणों से देश के मानस को अलगाववादी बनाना घोर आपत्तिजनक है। जनसंख्या वृद्धि के कारण अनेक समस्याएं जन्म लेती हैं। संसाधन घटते जाते हैं। 2023 में जनसंख्या वृद्धि की राष्ट्रीय चुनौती पर विशेष चर्चा नहीं हुई। समय के साथ प्रदूषण की समस्या विकराल होती जा रही है। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में तो सांस लेना कठिन है। इसने तमाम बीमारियों को जन्म दिया है। सरकार ने पर्यावरण संरक्षण की दिशा में काफी कुछ किया है, लेकिन इसे लेकर जनजागरण की आवश्यकता है। सनातन धर्म भी सेक्युलर हमले का निशाना रहा है। सनातन का सीधा अर्थ है, जो सदा से है, जो सदा रहता है और जो भविष्य में भी रहेगा, वह सनातन है।

सनातन अस्तित्व का नियम है और ब्रह्मांडीय अनुशासन है, लेकिन तमिलनाडु के एक मंत्री ने सनातन को डेंगू और मलेरिया आदि बताया था। यह राजनीति घटिया है। विश्वास है कि 2024 में सांस्कृतिक अपमानजनक टिप्पणियों पर रोक लगेगी। संविधान में संस्कृति का संवर्धन राष्ट्रीय कर्तव्य है। अपनी संस्कृति को ही अपमानित करने वाले लोग 2024 में जन उपेक्षा का विषय बन सकते हैं। भारतीय संस्कृति को मैक्समूलर आदि यूरोपीय विद्वानों ने भी श्रेष्ठ बताया है। उम्मीद है कि 2024 में मथुरा, काशी सहित सभी सांस्कृतिक प्रतीकों की प्रतिष्ठा बढ़ेगी। सभी नागरिकों के लिए एक समान नागरिक संहिता राष्ट्र निर्माताओं का स्वप्न रही है। संविधान निर्माताओं ने इस अपेक्षा को राज्य के नीति निदेशक तत्वों संहिताबद्ध किया था। नागरिक संहिता 2023 में भी विमर्श का विषय रही है। इस विषय पर पहले ही देर हो गई है। विश्वास है 2024 में इसे सामान्य लोक स्वीकृति मिलेगी और तद्नुसार विधायन होगा। नए साल की चुनौतियां बड़ी हैं। इसी साल आम चुनाव हैं। संसदीय जनतंत्र में चुनाव महत्वपूर्ण उत्सव होते हैं, लेकिन चुनावी विमर्श में शब्द अराजकता बढ़ी है। व्यक्तिगत आरोप एवं आक्षेप बढ़े हैं। इस कारण विमर्श के महत्वपूर्ण मुद्दे पृष्ठभूमि में चले जाते हैं। दलीय घोषणा पत्रों पर बहस नहीं होती। चुनावी आचार संहिता तार-तार होती है। चुनाव आयोग से लेकर चुनाव कराने वाला प्रशासनिक तंत्र भी विषम चुनौतियों का सामना करता है। कभी-कभी चुनाव आयोग पर भी राजनीतिक दलों द्वारा आरोप लगाए जाते हैं। आयोग स्वतंत्र संवैधानिक संस्था है। विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र में ऐसे आरोप अन्तरराष्ट्रीय अपयश बनते हैं। विचार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का भी बहुधा दुरूपयोग होता है। छिटपुट हिंसा भी होती है। कायदे से दलीय नीतियों पर बहस होनी चाहिए। प्रत्येक दल को अपनी नीति एवं कार्यक्रम के आधार पर लोकमत बनाना चाहिए, लेकिन प्राय: ऐसा नहीं होता। 2024 में आदर्श चुनाव राष्ट्रीय अभिलाषा हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने लाल किले से अपने सम्बोधन में देशवासियों से पाँच प्रण लेने का आह्वान किया था। उस संबोधन में 2022 से 2047 तक के समय को अमृतकाल कहा गया। इन संकल्पों में विकसित भारत, गुलामी के सोच से मुक्ति, विरासत पर गर्व, एकता एवं एकजुटता और नागरिकों द्वारा कर्तव्य पालन पाँच प्रण हैं। इनमें 2047 तक भारत को विकसित बनाने का ध्येय महत्वपूर्ण है। प्रण सांस्कृतिक हैं। उनके लक्ष्य आर्थिक हैं। राष्ट्रीय एकता महत्वपूर्ण लक्ष्य है। विश्वास है कि पांचों प्रण/संकल्प भारत के राष्ट्रजीवन में गुणात्मक परिवर्तन लाएंगे। 2024 में ऐसे सभी राष्ट्रीय प्रश्नों एवं चुनौतियों पर गहन विमर्श की सम्भावनाएं हैं। उम्मीद है कि राष्ट्रजीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में सक्रिय महानुभाव गहन विमर्श के लिए आगे आएंगे। साझा विचार और समवेत संकल्प 2024 को मंगलमय बनाएंगे। राजनीतिक पार्टियां और नेता हवा का रुख भांप रहे हैं। वो नई-नई रणनीतियां बनाने में जुटे हैं। किन मुद्दों पर चुनाव लड़ेंगी बड़ी पार्टियां और किन चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा चुनाव आयोग को। इसके सिवा देश-विदेश के मोर्चे पर कई तरह की चुनौतियां होंगी तो बहुत से अवसरों को लपकने का मौका भी होगा। यह देखना होगा कि सरकार और सुरक्षा बल इन चुनौतियों का कैसे सामना करते हैं और आने वाले साल में भारत की रक्षा और विदेश नीति को किस मोड़ देते हैं।

2023 का वर्ष भारत के लिए कई मायनों में बहुत अच्छा बीता, हालांकि कुछ चुनौतियां भी देखने को मिलीं। यह तो सामान्य नियम है कि सिर्फ अच्छा-अच्छा तो हो नहीं सकता। अर्थव्यवस्था में पर्याप्त कार्यबल का प्रवेश, डिजिटल क्षमताओं से लैस आबादी और एक सम्पन्न नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र का विकास सामूहिक रूप से एक व्यापक प्रतिभा पूल के निर्माण में योगदान देता है। निवेश के क्षेत्र में, भारत की अपील कायम है, जो वैश्विक कम्पनियों को पर्याप्त पैमाने, कुशल प्रतिभा और अत्याधुनिक तकनीक प्रदान करती है। सूक्ष्म, लघु या मध्यम उद्यम उपभोग, विनिर्माण और बुनियादी ढांचे के निवेश में निरन्तर वृद्धि के लिए नौकरियों, आय, क्षमताओं और पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण बने रहेंगे। 2024 में भारत में विदेशी निवेशकों को आकर्षित करने वाले प्रमुख उद्योगों में स्वास्थ्य सेवा और बीमा, फिनटेक, नवीकरणीय ऊर्जा और जलवायु तकनीक, इलेक्ट्रिक वाहन और ऑटोमोबाइल, आईटी और सेवाएं, रियल एस्टेट और बुनियादी ढांचा, तकनीकी नवाचार शामिल हैं। भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था निवेशकों को आकर्षित करती रहेगी क्योंकि लोगों के जीवन, शासन और उद्यम संचालन में बदलाव के लिए प्रौद्योगिकी-आधारित समाधान मांगे जा रहे हैं। ऑनलाइन उत्पादों और सेवाओं की मांग में तेजी से वृद्धि भारत के गैर-महानगरीय (टियर-2 और टियर-3) शहरों की बढ़ती खर्च करने की शक्ति का भी प्रतिबिम्ब है। 2014 में कुल सकल घरेलू उत्पाद में डिजिटल अर्थव्यवस्था का हिस्सा 4-4.5 प्रतिशत था और वर्तमान में यह 11 प्रतिशत है। सरकार का अनुमान है कि डिजिटल अर्थव्यवस्था 2026 तक भारतीय सकल घरेलू उत्पाद का 20 प्रतिशत से अधिक हो जाएगी। भारतीय आईटी उद्योग लगातार आगे बढ़ रहा है, क्योंकि इसकी विशेषज्ञता सभी क्षेत्रों पर लागू होती है, और 2030 तक 350 बिलियन अमेरिकी डॉलर का राजस्व उत्पन्न होने का अनुमान है (यह वर्तमान में सकल घरेलू उत्पाद में 8 प्रतिशत का योगदान देता है।2024 में निवेश-आधारित विकास के लिए तैयार उभरते उद्योग हैं बैटरी ऊर्जा भण्डारण समाधान, हरित हाइड्रोजन , जैव प्रौद्योगिकी, एवीजीसी (एनीमेशन, दृश्य प्रभाव, गेमिंग, कामिक्स) और सेमीकंडक्टर चिप निर्माण, असेंबली और डिजाइन। भारतीय बाजार पर नजर रखने वाली विदेशी कम्पनियां फायदे में हैं क्योंकि राज्य सरकारें लचीली हैं और अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी को आकर्षित करने और बड़े पैमाने पर रोजगार पैदा करने के लिए प्रतिस्पर्धी छूट की पेशकश करती हैं। नौकरियों की बदलती प्रकृति और इसके बड़े युवा जनसांख्यिकीय समूह को देखते हुए, शिक्षा सुधार और कौशल नीति निर्माताओं के लिए बड़े फोकस क्षेत्र हैं। भारतीय शिक्षा बाजार में करीब 1.5 मिलियन स्कूल और लगभग 265 मिलियन छात्र हैं। विशेषज्ञों का अनुमान है कि भारत का शिक्षा क्षेत्र वित्त वर्ष 2029-30 तक 313 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँच जाएगा। इस तरह सन 2024 भारत में नई सामाजिक राजनैतिक आर्थिक क्रान्ति की नई सुबह लेकर आ रहा है। चुनौतियों की भले ही भरमार लग रही हो, लेकिन उम्मीदें और सम्भावनाएं भी कम नहीं हैं। जिम्मेदारी को समझते हुए, सजग रहते हुए नये साल में संभल-संभल कर पग धरेंगे तो निश्चित रूप से नये फलक पर विचरण के लिए कल्पनाओं को पंख लगेंगे और हर नयी डगर हकीकत के धरातल पर सकुशल आगे बढ़ेगी। अपने हिस्से की जिम्मेदारी को समझते हुए हर कोई कर्तव्य और अधिकार का सन्तुलन बनाए रखे तो यह परिवार, समाज के साथ देशहित में होगा।

ज्योतिष की बातें - 161

15 जनवरी 2024 को सूर्य शत्रुराशि मकर में प्रवेश करेगा। वहाँ पर कोई शुभ दृष्टि भी नहीं होगी अत: सूर्य अत्यन्त निर्बल रहेगा। फिर भी स्वास्थ्य, सफलता आदि अपने कारक विषयों में सूर्य अगले एक महीने वृश्चिक, सिंह, मेष व मीन राशि के जातकों को अल्पमात्र में शुभफल प्रदान करेगा। अन्य राशि के जातकों को अभी प्रतीक्षा करनी चाहिए।

18 जनवरी 2024 को शुक्र समग्रह की राशि धनु में प्रवेश करेगा, जहाँ पर कुछ दिन तक मंगल विद्यमान रहेगा और गुरु की शुभ दृष्टि भी पड़ेगी। फलदीपिका के अनुसार शुक्र छठवें, सातवें, और दशवें स्थान पर अशुभ फल देता है, शेष स्थानों पर शुभ रहता है। अत: अगले 26 दिन मेष, वृषभ, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर व कुम्भ राशि के जातकों को सांसारिक सुख आदि अपने कारक विषयों में शुक्र अत्यन्त शुभफल प्रदान करेगा। शेष तीन राशियों को अभी प्रतीक्षा करनी चाहिए।

मकर संक्रान्ति- 15 जनवरी 2024 से संक्रान्ति पुण्यकाल के उपरान्त यज्ञोपवीत आदि संस्कार और गृह प्रवेश आदि शुभ कार्य पुन: प्रारम्भ हो जाएंगे।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 52

यूज़ एण्ड थ्रो संस्कृति

पहले इंजेक्शन लगाने की सुई गर्म पानी में धोकर बार-बार उपयोग में आती थी, फिर टिटनेस का भय जनता में बैठाया गया तो हर बार इंजेक्शन के लिए नई सुई का प्रयोग होने लगा। अब अस्पतालों में सुइयों, काँच की सीसियों आदि का ढेर लगा रहता है। पूरे देश में करोड़ों सुइयाँ एक बार उपयोग के बाद फेंक दी जाती हैं। इसी प्रकार डाक्टर दस्ताने एक बार उपयोग करके फेंक देते हैं। देश भर में करोड़ों दस्ताने आदि भी प्रतिदिन फेंक दिए जाते हैं। नाई भी हर एक दाढ़ी बनाने के लिये दूसरा ही ब्लेड लगाता है। पहले एक ही उस्तरा सालों साल चलता रहता था। अब करोड़ों ब्लेड इस प्रकार प्रतिदिन एक बार यूज करके फेंक दिए जाते हैं। आजकल बच्चों को हर बार टट्टी कराने के लिए हगीस का प्रयोग होता है। महिलाएं सैनिटरी नैपकिंस का उपयोग करती हैं जो कि एक बार ही उपयोग होता है। इस कारण यह पूरी पृथ्वी ब्लेड, इंजेक्शन की सुई जैसी कटीली, नुकीली वस्तुओं और हगीस और नैपकिंस जैसी गन्दगी के द्वारा भरी पड़ी है। अब तो हद हो गई है कि मकान भी यूज एंड थ्रो प्रकार के बनने लगे हैं। पहले के मकान तीन-चार पीढ़ी तक चलते रहते थे अब हर पीढ़ी के लिए अलग मकान बनवाना पड़ रहा है क्योंकि सीमेंट से बनने वाले मकान की आयु लगभग 30-35 वर्ष ही होती है।

एक बार ही उपयोग होने वाली वस्तुओं के निर्माण के कारण इस यूज एण्ड थ्रो नाम की संस्कृति ने देश को, यहाँ तक कि पूरी पृथ्वी को कबाड़घर बनाकर रख दिया है जो कि पर्यावरण विनाश का बहुत बड़ा कारण है। यदि इस पृथ्वी को पर्यावरण से बचाना है और स्वास्थ्य को ठीक रखना है तो इस 'यूज एण्ड थ्रो' संस्कृति को समाप्त करना होगा।

-सरल

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

गंगोलीहाट अस्पताल का उपचार हो

गंगोलीहाट। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में साधन-संसाधनों की कमी से यह रैफर केन्द्र बन गया है। क्षेत्रवासियों ने मांग की है कि एक बड़े इलाके के अस्पताल का उपचार शासन-प्रशासन करे ताकि जनता को परेशान न होना पड़े। मांग की है कि चिकित्सकों के रिक्त पदों को भरा जाए, स्टाफ के अन्य रिक्त पद भी भरें और जरूरी उपकरणों को शामिल किाय जाए।

मायावती में मनाई शारदा जयन्ती

लोहाघाट। प्रसिद्ध अद्वैत आश्रम मायावती में स्वामी विवेकानन्द के आध्यात्मिक गुरु रामकृष्ण परमहंस की आध्यात्मिक सह-धर्मिणी मां शारदा की जयन्ती धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर प्रबुद्ध भारत के सम्पापक स्वामी गुनोत्तमानन्द महाराज ने शारदा मां के जीवन पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए बताया कि रमाकृष्ण मिशन में वह 'श्रीमां' के नाम से जानी जाती हैं।

मेला स्थल जोड़ने वाला मार्ग खराब

लोहाघाट। छमनियां से पाटनगाँव के झूमा धुरी मेला स्थल को जोड़ने वाला मार्ग बेहद खराब है। शहीद लांसनायक प्रकाश सिंह मोटर मार्ग की बदहाली से पूरा क्षेत्र परेशान है। क्षेत्रवासियों व वाहन चालकों ने मार्ग पर शीघ्र डामरीकरण करने की मांग की है। लोनिवि का कहना है कि डामरीकरण से छूटे शेष हिस्से का पैच वर्क का कार्य कर लिया गया है। जल्द ही शेष कार्य पूरा किया जायेगा।

फ्रीहोल्ड दरों में वृद्धि वापस लो

रामनगर। राज्य सेनारियों ने सरकार से नजूल भूमि के फ्री होल्ड की दरों में की गई अप्रत्याशित वृद्धि पर रोष जताते हुए इन दरों को वापस लेने की मांग की है। प्रभात ध्यानी के आवास पर हुई बैठक में राज्य सेनानियों ने सरकारी नौकरियों में राज्य सेनानियों को दस फीसदी क्षैतिज आरक्षण देने, फ्री होल्ड की दरें कम करने समेत अन्य मुद्दों पर चर्चा की।

लालकुआ में भी विद्युत शवदाह गृह

हल्द्वानी। लालकुआ स्थित मुक्तिधाम श्मशान घाट में इलेक्ट्रिक शवदाह गृह होगा। इसके लिये तराई केन्द्रीय वन प्रभाग के डीएफओ हिमांशु बंगारी ने निरीक्षण किया। बताया कि योजना की स्थलीय रिपोर्ट तैयार कर शासन को भेजी जायेगी और अनुमति मिलने पर कार्रवाई होगी।

वेडिंग डेस्टिनेशन

देहरादून। आगामी चारधाम यात्रा की तैयारियां भी जारी हैं। बदरी-केदार मन्दिर समिति की बैठक में कई प्रस्ताव भी पास हुए हैं जिसमें त्रियुगीनारायण मन्दिर क्षेत्र को वेडिंग डिस्टनेशन के रूप में विकसित करने का प्रस्ताव भी है। इसके अलावा सौन्दर्यीकरण के कई प्रस्ताव हैं।

रं खेल महोत्सव की धूम मची

धारचूला। रं खेल महोत्सव की धूम इस बार भी रही। समारोह का शुभारम्भ समाजसेवी शकुन्तला दताल ने करते हुए अपने पति स्व. रूप सिंह दताल की स्मृति में बालीबाल प्रतियोगिता हेतु 21000 व बैटमिंटन टूर्नामेंट के विजेता को 3500 की नकद राशि प्रदान की।

रं कल्याण समिति की ओर से होने वाले इस आयोजन को लेकर वरिष्ठ समाजसेवी महिमन सिंह ह्यांकी सहित तमाम लोग कई दिनों से प्रचार-प्रसार में जुटे थे। उन्होंने उम्मीद जताई कि दूरस्थ क्षेत्र के खिलाडी इन आयोजनों के माध्यम से अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए भविष्य की राह दिखाएंगे।

खेल महोत्सव जवाहर सिंह नबियाल स्टेडियम में हुए। खेल सचिव डॉ. किशोर सिंह ने कहा कि इस आयोजन से क्षेत्र की प्रतिभाओं को आगे बढ़ने का मौका मिलता है। धारचूला इकाई के अध्यक्ष दीपक सिंह रोंकली ने बताया कि रं संस्था, नमामि गंगे और नगर पालिका के सहयोग से खेल महोत्सव को वृहद आकार दिया गया है। समारोह में अशोक नबियाल, राम सिंह ह्यांकी, डॉ. दिनेश चलाल, दौलत सिंह फकलियाल, निहारिका गर्ब्याल, भागेश्वरी देवी, छोरी देवी आदि उपस्थित थे।

खेल आयोजन में 21 किमी की मैराथन दौड़ को लेकर लोगों में जोश था। इसे देखने के लिये भी सुबह से ही लोग जुट गये। इसमें नेपाल, चम्पावत, पिथौरागढ़, अल्मोड़ा से खिलाड़ी पहुँचे थे।

कुविवि का दीक्षांत समारोह १९ को

नैनीताल। कुमाऊँ विश्वविद्यालय का 18वां दीक्षान्त समारोह 19 जनवरी को होगा। इसमें 76 मेधावियों को कुलपति स्वर्ण पदक प्रदान किये जाएंगे। जबकि 452 शोधार्थियों को पीएचडी की उपाधि दी जाएगी। इस वर्ष विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों को कुल 18 तरह के पदक दिए जाएंगे। आयोजन में कुलाधिपति राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल (सेनि.) गुरमीत सिंह मुख्य अतिथि के रूप में पधार रहे हैं।

पंचायत प्रतिनिधि करेंगे नगर पंचायत का विरोध

मुनस्यारी। नगर प्रस्तावित नगर पंचायत को लेकर आयोजित बैठक में अधिकारियों के नहीं आने से बैठक नहीं हुई। पंचायत प्रतिनिधियों ने नहीं आने वाले लापरवाह अधिकारियों के खिलाफ निन्दा प्रस्ताव पास किया। विभागों के इस व्यवहार से आहत पंचायतो ने नगर पंचायत को अस्वीकार करने का प्रस्ताव भी पारित किया। उन्होंने कहा कि जब तक नगर पंचायत से होने वाले लाभ तथा हानि की जानकारी को नहीं दी जाती है, तब तक नगर पंचायत का बोर्ड क्षेत्र में नहीं लगने दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि इन अधिकारियों के खिलाफ जिलाधिकारी कार्रवाई करे अन्यथा क्षेत्र पंचायत तथा जिला पंचायत की बैठक में सामूहिक धरना प्रदर्शन किया जाएगा।

प्रस्तावित नगर पंचायत को लेकर जिला पंचायत सदस्य जगत मर्तोलिया की उपस्थिति में बैठक हुई। बैठक में वन विभाग के डिप्टी रंजन तथा तहसीलदार के अलावा कोई भी विभाग अध्यक्ष नहीं आया। जिलाधिकारी द्वारा विभागों को इस बैठक में शामिल होकर नगर पंचायत के गठन के बाद होने वाले लाभ हानि के विषय पर 5 ग्राम पंचायतों की जनता को जागरूक किए जाने का आदेश दिया गया था। जिला पंचायत सदस्य जगत मर्तोलिया ने कहा कि डीएम को भेजे ज्ञापन में पंचायत के प्रतिनिधियों में स्पष्ट कर दिया है कि अब नगर पंचायत को लेकर अगर किसी बैठक की आवश्यकता होती है। तो जिला प्रशासन स्वयं आयोजित करें। इस बैठक में नगर पंचायत को लेकर शंकाओं का निराकरण होना था। बैठक में श्री मर्तोलिया, ग्राम प्रधान नवीन राम, कृष्णा सिंह सयाना, सदस्य क्षेत्र पंचायत सदस्य केदार राम, कैलाश सिंह सुमत्याल, महेश सिंह सिंह रावत, लोक बहादुर सिंह जंगपांगी आदि मौजूद रहे।

जनजातियों की समस्याएं हल करें

चम्पावत। मुख्य विकास अधिकारी कार्यालय कक्ष में आयोजित बैठक में जिलाधिकारी नवनीत पाण्डेय ने जिले में विशेष रूप से अनुसूचित जनजाति समूह की सामाजिक, आर्थिक उन्नति के लिये चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं को बेहतर क्रियान्वयन के लिए शिविर लगाकर समस्याओं से अवगत होने के निर्देश दिये हैं। उन्होंने कहा कि प्रधान मंत्री जनमन योजना में जिला समाज कल्याण अधिकारी व खण्ड विकास अधिकारी को सहायक नोडल अधिकारी नामित किया गया है। इस जनमन योजना के तहत जनजातीय मंत्रालय समेत 9 मंत्रालयों की योजनाएं शामिल हैं। सभी अधिकारी जनजाति समूह के लोगों को जनकल्याण कारी योजनाओं का लाभ दिलाने के लिये पीएम जनमन योजना के तहत विशेष प्राथमिकता के आधार पर कार्य करें।

परिक्रमा

जौलजीवी पीएचसी के लिये भर्ती

देहरादून। मुख्यमंत्री के निर्देश पर राज्य स्वास्थ्य विभाग पर्वतीय जिलों में स्वास्थ्य सेवाओं को युद्धस्तर पर मजबूत करने पर जुटा हुआ है। इसको लेकर सबसे पहले राज्य के सभी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों में चिकित्सा स्टाफ की कमी के साथ ही चिकित्सा उपकरणों की कमी दूर करने के निर्देश स्वास्थ्य सचिव डॉ. आर राजेश कुमार को दिए हैं। इसी क्रम में स्वास्थ्य विभाग ने जौलजीबी स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संचालन के लिए 10 पदों के सृजन के लिए मंजूरी प्रदान की है। इन पदों में स्वास्थ्य अधिकारी, नर्स, फार्मासिस्ट, लैब टेक्नीशियन और तीन पद चतुर्थ कर्मचारियों के लिए हैं। स्वास्थ्य सचिव ने कहा है कि इन पदों पर नियुक्ति के लिए राज्यपाल से अनुमति मिल गयी है। जौलजीबी में इंडियन पब्लिक हेल्थ स्टैंडर्ड के मानकों के अनुसार प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र का संचालन किया जा रहा है। इसके लिए स्वास्थ्य महानिदेशालय ने विभाग से 10 पदों के सृजन के लिए अनुमति मांगी थी।

टनकपुर-जौलजीवी के बीच ३ नए पुल

टनकपुर। भारत-नेपाल सीमा से लगी टनकपुर-जौलजीवी मोटर मार्ग पर तीन नए पुल बनाए जायेंगे। इन पुलों का निर्माण कार्य शीघ्र ही शुरु होगा।

लधिया के गधेरे में 24-24 मीटर के तीन पुलों को बनाने से इस सड़क पर बरसात में गधेरे के उफान का असर नहीं होगा। इससे सड़क पर आवाजाही बाधित होने का खतरा भी नहीं रहेगा। प्रस्तावित पंचेश्वर बांध का डूब क्षेत्र तय नहीं होने से 132 किमी की टनकपुर-जौलजीवी सड़क का कार्य जौलजीवी के बजाय टनकपुर से 55 किमी दूर रूपालीगाड़ तक किया जा रहा है। टनकपुर से ठुलीगाड़ तक 12 किमी सड़क पहले ही बन चुकी है। ठुलीगाड़ से चूका के 18.600 किमी लम्बे चूका-रूपालीगाड़ सड़क के दूसरे पैकेज का कार्य जारी है। टनकपुर- जौलजीवी सड़क के मूल प्रस्ताव में ये पुल नहीं थे, पर आपदा के बाद इनका प्रस्ताव बना।

राष्ट्रीय खेलों के लिये गूलरभोज तैयार

रुद्रपुर। राष्ट्रीय खेलों के लिए गूलरभोज में आधारभूत सुविधाएं विकसित की जा रही हैं। खिलाड़ियों के स्वागत के लिये बौर जलाशय तक शानदार सड़कें बननी हैं और जल क्रीड़ा के लिये 76 नाव खरीद होनी हैं।

खेल निदेशक जितेन्द्र सोनकर के अनुसार 38वें राष्ट्रीय खेलों के लिये आधारभूत सुविधाएं विकसित करने के लिये कार्य किये जा रहे हैं। गूलरभोज के बौर जलाशय में जलक्रीड़ा प्रतियोगिताएं होंगी। इसके लिये एप्रोच सड़क बनाने समेत अन्य जरूरी सुविधाएं जुटाई जा रही हैं। इसके लिये सम्बन्धित विभाग तैयारियों में जुटे हैं।

बताया गया है कि रुद्रपुर स्टेडियम में बालीबाल, हैण्डबाल, साइकिलिंग और तलवारबाजी की प्रतियोगिताएं होंगी। वहीं बौर जलाशय में कयाकिंग-केनोइंग, रोइंग और सलालम जल खेलों का अयोजन होना है। बौर जलाशय में पहले भी चार राष्ट्रीय स्तर की जलक्रीड़ा प्रतियोगिताएं हो चुकी हैं। इससे यहाँ पर्यटकों का रुझान भी बढ़ा है।

नैनीताल में दुकानों का आंशिक अतिक्रमण हटाया जायेगा

नैनीताल। सरोवर नगरी के सात चौराहों के सौन्दर्यीकरण हेतु दुकानों का आंशिक अतिक्रमण हटाया जाना तय है। लोनिवि की ओर से प्रतिष्ठान स्वामियों को खुद अतिक्रमण हटाने की अपील की जा चुकी है। नगर में 5.49 करोड़ रुपये से सात चौराहों के सौन्दर्यीकरण के क्रम में तल्लीताल डांठ से कार्य जारी है। डांठ से तल्लीताल बोट स्टेंड तक एमईएस कैम्पस से लगे नाले को भी पाटा जा रहा है। दुकान स्वामियों के आंशिक अतिक्रमण पर विभाग की ओर से निशान लगाए गए हैं। इससे मल्लीताल रिक्शा स्टैंड के पास लगभग आठ, चीना बाबा चौराहे के पास दो व्यापारिक प्रतिष्ठान शामिल हैं। लोनिवि के अधिशासी अभियन्ता रमेश कुमार सक्सेना का कहना है कि चौड़ीकरण और सौन्दर्यीकरण की जद में आ रहे अतिक्रमण को व्यापारियों के सहयोग से हटा लिया जायेगा। उन्होंने सभी से सहयोग की अपील की है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

हल्द्वानी मुख्य सड़कें चौकी करने के लिये होने लगी तुड़ाई

कालू सिद्ध मन्दिर शिफ्ट होगा, सरकारी अस्पताल का कुछ हिस्सा भी टूटेगा

प्रशासन और व्यापारियों के बीच बेनजीता बैठक, विधायक सुमित सहित कई व्यापारियों ने किया बैठक का बहिष्कार

हल्द्वानी। चारों ओर बढ़त करते जा रहे हल्द्वानी का हाल तोड़फोड़ से ही ठीक होगा, यह सब लागू होने जा रहा है। मुख्य शहर से बाहर निकलने या शहर तक पहुँचने के लिये सड़क और सम्पर्क मार्गों को नये तरीके से विकसित किया जाना जरूरी हो गया है। बात जब करने की होती है तो प्रशासन के लिये जरूरी हो जाता है कि वह सबको विश्वास में ले, इसी कारण एक बैठक भी आयोजित की गई लेकिन प्रशासन और व्यापारियों के बीच बेनतीजा बैठक में सिर्फ यह निकल कर आया कि भविष्य में एक बैठक और होगी। सीडीओ अशोक कुमार पाण्डे की अध्यक्षता में हुई बैठक में समस्याओं का हल निकालने को बात होनी थी लेकिन मामला जब अतिक्रमण हो तो यह तीखा ही होगा। हल्द्वानी के विधायक सुमित हृदयेश सहित कुछ व्यापारियों ने बैठक का बहिष्कार किया।

मन बहलाने को कोई पार्टी, कोई संगठन, कोई व्यक्ति चाहे जो कहे लेकिन हल्द्वानी की सच्चाई यही है कि इस छोटे सुन्दर से शहर में बेपनाह प्यार था और एक-दूसरे की सुविधा का ध्यान रखा जाता था, प्यासे के लिये प्याऊ थे, यात्रियों के धर्मशाल, खिलाड़ियों के लिये व्यायामशाल, नाटक-महफिल- गजरा बेचने वाले, पान की दुकानें, पहाड़ से लेकर मैदान तक के व्यापारी लेकिन हल्द्वानी को ऐसी नजर लगी कि जंगल चोर, खनन माफिया, लुटेरे, मिट्टी पत्थर-रेता-बजरी चोर, शराब तस्करों सहित नशेड़ियों की भरमार होने लगी। छोटा शहर इन सारी बातों से मोटा हो गया और खेती की जमीनों पर प्लाटिंग होने लगी। अनाप-सनाप कालोनियां बन गईं। छोटे से मकान पर रहने वालों को भी फैलकर रहने का शौक लगा और वाहनों की जरूरत सबको हुई। ऐसे में सिंगल रोड हल्द्वानी से पहले तो हरे-भरे पेड़ पेड़ कटने लगे। कभी मुख्य मार्गों पर आम के बेहिसाब पेड़ हुआ करते थे। बाद में सड़क डबल कर दी गई लेकिन जनसंख्या के बढ़ते दबाव से यह सब भी फेल हो चुका है। सड़कों से लगे फुटपाथ भी घिरने लगे और नाली-नालों पर कब्जा हो गया। कालाढूंगी चौराहे पर आस्था का केन्द्र कालूसैय्यत मन्दिर तक निर्माण से सड़क तक आ गया। पुराने भवन सड़क से सटे दिखने लगे।

इस समय हल्द्वानी में यातायात बेतरतीब है। सैकड़ों टैम्पो-रिक्शा सहित सरकारी के अलावा सैकड़ों निजी वाहनों से जाम ही जाम है। ऐसे में पूरे शहर को पटरी में लाना जरूरी है। कहा जा रहा है कि शहर के चौराहे चारों तरफ से 50 मीटर चौड़े होंगे। शहर के बीचोंबीच कालूसिद्ध/ कालूसैय्यत मन्दिर शिफ्ट होगा और सरकारी अस्पताल का कुछ हिस्सा भी टूटेगा। इतना ही नहीं अतिक्रमण की चपेट में कई मन्दिर, होटल, अस्पताल आने हैं। इस बड़ी कार्रवाई के लिये चिन्हीकरण का कार्य भी जारी है। शहर में सबसे पहले सिन्धी चौराहे से चली कार्रवाई के बाद मुखानी, लालडांठ, कुसुमखेड़ा और ऊंचापुल जैसे व्यस्ततम चौराहों को चौड़ा किया जाना है।

जाम से मुक्ति दिलाने के लिये नगर निगम और लोनिवि की संयुक्त टीम ने सिन्धी चौराहे से अतिक्रमण हटान की कार्यवाही का शुभारम्भ किया। नोटिस के बाद देर रात अफसरों की टीम जेसीबी लेकर पहुँची और 20 मीटर के हिस्से से दुकानों के रैंप, सीढ़ियां, लोहे के जाल हटाए गए। इस चौराहे को 50 मीटर चौड़ा करने का काम शुरु हो चुका है।

शहर के चौराहों-तिराहों के चौड़ीकरण और जंक्शन सुधारीकरण के काम के लिये लोनिवि को 14.23 करोड़ रुपये का बजट मिला है। दिसम्बर दूसरे सप्ताह में लोनिवि ने निर्माण कार्य के टेंडर आमंत्रित किये और जनवरी की शुरुआत में चौड़ीकरण कार्य शुरु कर दिया गया है। बताया जा रहा है कि मुखानी चौराहे के आसपास कई बड़े होटल, धार्मिक स्थल, बैंक एटीएम, प्राइवेट अस्पताल, मेडिकल स्टोर संचालित हो रहे हैं। लालडांठ तिराहे के पास भी बहुमंजिली इमारतें, दुकानें, कुसुमखेड़ा चौराहे पर होटल, बैंक, एटीएम हैं। ऐसे में कई सरकारी और निजी सम्पत्तियां अतिक्रमण की जद में हैं।

यह पूरा मामला बहुत बड़ा है इसलिये अधिकारियों का कहना है कि कोई व्यापारी यदि सुझाव देना चाहता है तो लिखत या मौखिक रूप में दे सकता है। फिलहाल बदल रहे शहर की आहट साफ है...

जोहार घाटी के.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

दोनों ओर दूरी बराबर है बीच में दीवार के रूप दो प्रतिद्वन्द्वियो के बीच सदैव अटल बने रहे थे। आयुधजिबि प्रवृत्ति होने के कारण बृजवालों का उपनाम बाघ बिलज्वाल से सम्बोधित किया जाने लगा(सम्भवत:)।

भड़ौ (भेड़वा)मध्यकाल के उन बीरों की गाथाएं हैं जिन्होंने अपने पराक्रम के प्रदर्शन से सबका ध्यान खींचा था। कतिपय भेड़वा(भड़ों) की प्रचलित गाथाएं निम्न वीरों के नाम- रतनचंद रणुबौर, सुकराम कार्की, उदय बिष्ट, रतुवा फड़त्याल, लाली सौन, अजुबा बफौल की वीरगाथाओं को हुड़किया, चम्प्या, रणचम्प्या लोगों द्वारा गाया जाता था। तथा वीर योद्धाओं का उत्साह बढ़ाने के लिए भी राजाओं के साथ वाद्य वादक अतिशयोक्ति वर्णन गीत भी गाते थे।

जोहार घाटी में मिरासी लोग शादी-विवाह विशेष अवसर तथा बसंत ऋतु के आगमन पर ऋतुरेण गीत गाने हेतु घरों में आकर बृजवालो के विषय में जो बरमो गीत गाते थे-

'रनवार समदार को नाती, भेड़वा कार्की धुपराज को नाती, माल को मुलेनो, परबत कारी कानों, बैस गज को झुगली, बत्तीस गज को तानों, अल्योड घोड़ा, बल्योड़ा ठाकर, बैस माल खनी कांच, कार्की सकराम को खानौं'

मध्यकाल के इतिहास में सकराम कार्की जैसे व्यक्ति का नाम कई जगह इतिहास में उल्लेखि है। जो यह प्रमाण देता है सकराम शब्द शारीरिक बलिष्ठ, वीर पुरुष होने का प्रमाण देता है। बृजवालों के मूल पुरुष सकराम कार्की भी मनकोट से ही सम्बन्ध रखता है।

सकराम कार्की के वंशज तीन राठ में विभक्त है- सयाना राठ के मुख्य पुरूष शानिया, धुराठ के चुखिया तथा भदुवा राठ के लोरू था।

शानिया के दो लड़के अहरिया धामू था। अहरिया के दो लड़के पुतू व जसपाल हुए, धामू का चौतुवा, चौतुवा के तीन तीन लड़के कोंच्यो, रजू, धनु ये सयाना राठ कहलाते हैं। सयाना राठ सकराम के बशंजो में सबसे बड़े भाई (सयान) होने का संकेत देता है।

धुरा राठ, चुखिया के दो लड़के चकुड़िया व बगड़िया थे। चकुड़िया के दो लड़के चमु, काला था। अब उनका कोई नहीं रहा है बगड़िया का एक लड़का झूपी था झूपी की दो पत्नियों से तीन लड़के कुकड़िया, सुपीया व मंसरूवा हुए, ये धुरा राठ कहलाये।

लो के दो लड़के गंजू, हेटू गजू के तीन तीन लड़के कांसपाल, भदुवा, मंसरूवा हेटू का एक लड़का जैंता तथा जैंता का लड़का जसपाल इनको तब से गाँव के प्रधानचारी पद था जो भदुवा राठ कहलाये।

लोरू एक प्रसिद्ध पुरूष था, उसने समाज हित के कयी कार्य किये। गाँव का पधानचारी भी था इनके छोटे लड़के हेटू का लड़का जैंता, जैंता के लड़के जसपाल विलज्वाल जिसे नेपाल सरकार के समय गाँव का बुढ़ाचारी पद भी प्राप्त हुआ था। इनके बंशज आज भी पधान के नाम से ही जाने जाते है।

सम्वत् 1670 में लोरू बिलज्वाल द्वारा चंदशासक बाजबहादुर के मानसरोवर यात्रा में अगुवाई की गई। तब उसके द्वारा अल्मोड़ा राजधानी लौटने पर तल्ला दुम्मर, कोश्यारी बाड़ा बख्शीश में दिया गया। जोहार का लिपिबद्ध इतिहास कार्य भी यही से शुरू हुआ माना जाता है।

नेपाल सरकार के समय बिल्जू गाँव में मालगुजारी कर 356।। रु जो अत्यधिक कर भार था। जिसके लिए गाँव के लोगों द्वारा जोहार के बुढ़ा बिजेसिंह रावत, पंच जोहारी- बार पेंठा, राणा महता, बुढ़ा कमीन, सभी ओहदेदारों को फरियाद लगाई गई, किन्तु कुछ भी सुनवाई नहीं हुई थी।

अत्यधिक कर भार से धूरा राठ के लोग मल्ला पाछू रहने के लिए चले गए, सयाना राठ व भदुवा राठ के लोग दुगामी पट्टी चौंदास चले गये। अब बिल्जू में गाँव का पधान परिवार जसपाल व छैंता तथा दोंसपा (दास्पा) परिवार ही रह गये थे।

बिजेसिंह बुढ़ा द्वारा अपने हमराहियों के साथ बिल्जू में आ धमकने पर गाँव लोग कम दिखाई देने लगे जिस पर मुखिया जसपाल बिलज्वाल को गिरफ्तार कर लिया गया तथा गाँव से पलायन किये लोगों की शिनाख्त करने को कहा। केवल धूरा राठ लोगों की शिनाख्त हुई। गाँव वापस आने पर भी कर न देने की स्थिति में उनका नगद धन, जायदाद ज़मीन सम्पत्ति छीन लिया गया था।

अन्याययुक्त कर देने में छोटा सा बिल्जू गाँव के लोग असमर्थ थे। लोगों ने आपसी परामर्श कर नेपाल सरकार तक पहुँचने की योजना बनायी। सुपीया, मधु, थोला, फगू, मंछू पछपाल नेपाल सरकार के दरबार तक पहुँचे।

मधु, थोला, सुपिया बिलज्वाल ने बिजेसिह के बलात अत्याचार का हवाला दिया उनके द्वारा जो भी चीज़ें छीनी गई धूरा राठ के लोगों की नगदी, जमीन जायदाद भी जिसे वापस कराने का आग्रह नेपाल सरकार से करते हैं तल्ला पाछू जो गनघर कहलाता हैं वह उन्हें बख्शीश में मिला जगह है। स्वस्ति श्री भीम सिंह थापा जी, श्री काजी रणध्वज जी हमारे अपने गाँव के पधान जसपाल बिलज्वाल जी को गाँव का बुढ़ाचारी देने की कृपा करियेगा। सदैव आभारी रहेंगे।

सम्वत् 1870 को गाँव का बुढ़ा पद नकल पर्वान के तहत लाल मुहर जसपाल बिलज्वाल पधान के नाम करके नेपाल से वापस आये। जिसमें छः वर्ष का लम्बा समय लग गया तब कर कुछ कम हो गया था किन्तु ब्रिटिश शासन आने के बाद ता0 29 अक्टूबर 1872 ई0 को घटाकर बिल्लू गाँव का कर 105 रू कर दिया गया।

धामू भड़ (बलिष्ठ व्यद्रि) राठ का जिसने अपने पराक्रम से तिब्बत मार्ग पर व्यापारीयों का जान-माल की सुरक्षा की। एक बार तिब्बत सरकार द्वारा बंदी बना लेने पर अपने ईष्ट देव पुर्ब्याल जी का नाम लेते ही बेड़ियां चमत्कारी ढंग से टूटने लगा था। तब धमू भड़(बलिष्ठ व्यद्रि) तिब्बत के अधिकारियों के जानी दुश्मन बन गया, उनके क्षमा याचना पर जीवन बख्शीश दे दिया। तभी से तिब्बत सरकार ने जोहारीयों के लिए कोड़े मारे जाने का दण्ड तिब्बत में समाप्त कर दिया गया था।

सुपिया, मधु, थोला, फगू भी अपने-अपने कौम के नेता थे। तेज सिंह भगत जो सदैव ज्ञान, ध्यान, पूजा -पाठ सदाचारी चरित्रवान व्यक्ति था।

रतन सिंह, जसु तिब्बत के कपड़े-किराने के व्यापारी थे। दलपू का पुंगराव में दुकान था। रज्जू कानून का जानकार था लल्लू अन्न व नमक का धनी था। गाँव में एक अखबार भी आता था। एक लोअर स्कूल पुंगराव घाटी में तथा मिडिल स्कूल पढ़ने के लिए काण्डा जाना पड़ता था। बृजवालों का गोत्र भारद्वाज तथा पुरोहित खरही के जोशी थे।

1970-80 दशक के भी उच्च चरित्रवान व्यक्तियों को अपने पूर्वजों के आदर्शो का पालन करते लेखक ने अपने दृष्टि को सदृश्य देखा है जिसका ब्योरा आगे बृजवालों के सम्पूर्ण इतिहास में अवश्य उल्लेख किया जायेगा।

बृजवालों का ईष्ट देव-देवी नन्दा देवी, पुर्ब्याल देवता, कोटगाड़ी देबी, थतीयाल- भुमियाल आदि देबी-देवताओं की अराधना भी करते हैं। पूर्व में बृजवाल लोग कांकू देवता की पूजा-पाठ करते थे। देवी या देवता जिनकी जानकारी अभी तक नहीं है, जो अब समाप्त हो चुका है पूजा विधि-विधान के विषय की के विषय में भी पता नहीं। भविष्य में इतिहास इस विषय की जानकारी की सम्भावना भी है।

नन्दा देवी की पूजा जोहार घाटी में करते हैं पर्वोत्सव रात्री में किया जाता है जिसके विषय में कहा जाता है कि माँ नन्दा ने आते -जाते कुछ देर बिल्जू में विश्राम किया था। बिल्लू गाँव से महज 200 भी दूरी से प्राकृतिक रूप से उकेरा हिम ओम का दर्शन गफ्फू धार से किया जाता है।

बृजवाल लोग मुनस्यारी में मल्ला घोरपटा, तल्ला दुम्मर वह शीत ऋतु में चोंसला, मुसलिया, दोबगरा, दतोराथल रहते हैं कहा जाता है कि क्षेत्र इस क्षेत्र में स्व. दुर्गेश सिंह बृजवाल 'हिमाल' जी ने फ्लांटी जगह का नामकरण फल्यांट पेड़ अधिक होने के कारण एक नया नाम फ्लांटी दिया जो आज भी चर्चित नाम है।

कालान्तर में भारत आजादी के स्वतंत्रता आन्दोलन में स्व. त्रिलोक सिंह बृजवाल 'नेता' जी ने सम्मिलित होकर गाँव, क्षेत्र, देश का मान सम्मान बढ़ाकर अपने कौम को भी गोरवान्वित किया है जो समाजसेवी भी थे। गाँव के ही विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति अमर लोकगीत के रचनाकार स्व. दुर्गेश सिंह बृजवाल 'हिमाल' ने 'हामरो देश, हामरो हिमाल', 'पहाड़ की चेली' 'रंगिलो मूलूक मेरो' जैसे गीत रचना कर सदा के लिए लोक कला साहित्य के इतिहास में सदैव के लिए नाम दर्ज कर लिया है। जो साहित्यकार, गीतकार, संगीतकार उच्च कोटि के चित्रकार भी थे। ऐसे महान विभूतियों की यादें युग-युगान्तर तक आती रहेगी। धूरा राठ स्व. के. के. कुमार बृजवाल जो मूक बधिर होने के बाबजूद एक कुशल आर्टिस्ट, मैकेनिक, चित्रकार बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति था। भविष्य की पीढ़ियों से यही आशा रखते हैं कि अपनी भी प्रतिभावों से इतिहास को सुसज्जित, सुव्यवस्थित, सुशोभित करते निरन्तर अग्रसर रहेंगे। अपने पूर्वजों स्मृतियों को जेहन में रखते श्रद्धा सुमन श्रृद्धांजलि अर्पित करते हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

मकर संक्रान्ति/उत्तरायणी की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

हीरा चिराल
मल्ला घोरपट्टा, हास्पिटल लाइन मुनस्यारी

डॉ०जी०सी०पन्त
मातृ कुंज,
बसन्त विहार (चोरपानी)
रामनगर
(नैनीताल)

जगत सिंह मर्तोलिया
ग्राम बला मगर, पो० मडलकिया, मुनस्यारी

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
मो.- 9458920379, 6396098804

YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING

Near by-
(माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

घर से बाहर घर का सा
होटल
लक्ष्य इन
मदकोट
सम्पर्क
7351285555

MARTOLIA FURNITURE
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi, Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

Hayat Paradise
Bus Station
Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग,माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

माँ नन्दा आयरन एण्ड बिल्डिंग मैटेरियल, भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी
(सीमेन्ट, सरिया, टाइल, पेण्ट, सेनेटरी, हार्डवेयर)
गोदाम- जोहार एसोसिएट्स
बच्चीनगर- 1, कमलुवागांजा, हल्द्वानी
मो.- 7409440813, 7500619761

उत्तरायणी की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-
भोला दत्त भट्ट
पूर्व ब्लाक प्रमुख
हल्द्वानी

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
8958525979, 9411134775

Enjoy Beauty of Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/फैक्सः (05946) 264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com
पत्र व्यवहार के लिये पते- जे0के0पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)